लहसुन की खेती की तकनीक

देवी दर्शन[1] और रीमा देवी[2]

[1]बागवानी और वानिकी महाविद्यालय, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, (पंजाब)
[2]खाद्य और पोषण विभाग, पीजीआरसी, प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राजेंद्रनगर, हैदराबाद
ईमेल: devidarshantiwari@gmail.com

लहसुन का परिचय

लहसुन का वानस्पतिक नाम-***एलियम सैटिवुम***
लहसुन का परिवार है- **Amaryllidaceae**
गुणसूत्र संख्या-**2n=16**
लहसुन की उत्पत्ति-**मध्य एशिया**
लहसुन का खाने योग्य भाग है: **लौंग (क्लोव)**
लहसुन एक **क्रॉस-परागित** फसल है।

लहसुन का महत्व

- यह फ्रॉस्ट हार्डी बल्बस हर्ब है।
- लौंग का प्रयोग मसाले के रूप में किया जाता है।
- लहसुन अमीनो एसिड और प्रोटीन से भरपूर फसल है।
- लहसुन के अमीनो एसिड को एलिन कहते हैं।
- एलिनेज एंजाइम की सहायता से एलिन एलिसिन में परिवर्तित हो जाता है।
- एलिसिन में एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं।

e-ISSN No. 2583-0937

- लहसुन में तीखापन डायलील डाइसल्फ़ाइड और एलिल-प्रोपाइल डाइसल्फ़ाइड के कारण होता है।
- लहसुन कोलेस्ट्रॉल और रक्तचाप को भी कम करता है।
- घाव भरने की क्षमता के भी गुण होते हैं।
- लहसुन का उपयोग कीटनाशक के रूप में भी किया जाता है।

लहसुन की किस्में

पंत लोहित, एग्रीफाउंड व्हाइट, एग्रीफाउंड पार्वती, यमुना सफेद, (जी-1), यमुना सफेद-2, (जी-50) यमुना सफेद 3, (जी-282), यमुना सफेद-4 (जी-323), ऊटी-1

भाकृअनुप-डीओजीआर, पुणे से लहसुन की किस्में

भीम ओंकार, भीम पर्पल

- लहसुन की खेती के लिए किस प्रकार की जलवायु की आवश्यकता होती है।
- लहसुन की खेती के लिए हल्की जलवायु सर्वोत्तम होती है।
- लहसुन के लिए कम दिन और कम तापमान की क्रिया वनस्पति वृद्धि के साथ मेल खाना चाहिए।
- दिन की लंबाई 8 से 12 घंटे तक बढ़ाने से लहसुन के बल्ब का वजनए व्यास और लौंग लहसुन की संख्या में वृद्धि हुई।
- लहसुन में बल्ब लगाने के लिए महत्वपूर्ण दिन की अवधि 12 घंटे पाई जाती है।
- कम दिन की स्थिति लहसुन में बल्ब के गठन को दबा देती है।

लहसुन की खेती के लिए किस प्रकार की मिट्टी सबसे अच्छी होती है

- लहसुन को अच्छी जल निकास वाली रेतीली दोमट मिट्टी में उगाया जाना चाहिए।
- लहसुन उच्च अम्लता के प्रति संवेदनशील हैए इसलिए हमें अम्लीय मिट्टी से बचना चाहिए।
- लहसुन के लिए इष्टतम पीएच की आवश्यकता 5.8 से 6.5 है।

लहसुन की खेती के लिए खेत की तैयारी

मिट्टी की तैयारी

- बार-बार जुताई करके मिट्टी को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए।
- अच्छी तरह से विघटित एफवाईएम 10 से 20 टन प्रति हेक्टेयर की दर से डालना है ।

प्रसार

- लौंग या बुलबिल या हवाई बुलबिल द्वारा
- उत्खनन के रूप में उपयोग की जाने वाली ऊतक संवर्धन तकनीकें भी प्रचलन में हैं।

लहसुन की बुवाई का मौसम

- महाराष्ट्र, कर्नाटक और एपी में: अगस्त से नवंबर सबसे अच्छा है।
- भारत के उत्तरी मैदानों में: सितंबर से नवंबर सबसे अच्छा है।
- पहाड़ी इलाकों में: मार्च-अप्रैल सबसे अच्छा होता है।

लहसुन की दूरी

- लहसुन की आदर्श दूरी 15 सेमी 10 सेमी है।

लहसुन की बीज दर

- 500 से 600 किलो लौंग प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।

लहसुन की बुवाई तीन तरीकों से की जा सकती है

1. डिब्लिंग
2. फरो रोपण
3. ब्रॉड कास्टिंग

जब दूरी कम हो जाती है: बल्ब का आकार कम हो जाता है लेकिन लहसुन की कुल उपज बढ़ जाती है।
जब व्यापक स्थानर: बल्ब का अपनाया गया आकार बढ़ता है लेकिन कुल उपज घट जाती है।

- लहसुन की कलियों को अंकुरण बढ़ाने के लिए बुवाई से पहले लगभग 24 घंटे के लिए 1000 पीपीएम की दर से साइक्लोसेल (सीसीसी) में भिगोया जाता है। (सीसीसी एक पौधे की वृद्धि नियामक है)

लहसुन की फसल में जल प्रबंधन

- लहसुन की बिजाई से पहले खेत में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।

e-ISSN No. 2583-0937

- लहसुन के खेत में हर तीसरे सप्ताह में सिंचाई की जाती है।
- प्रारंभिक अवस्था के दौरान फसल की अधिक बार (सप्ताह में एक बार) सिंचाई की जाती है लेकिन बाद में ।

फसल

- 15 दिन में एक बार सिंचाई करें।
- फसल की परिपक्वता अवस्था में पहुंचने पर सिंचाई की आवृत्ति कम हो जाती है।
- कटाई के समय सिंचाई बंद कर दी जाती है।

लहसुन की खाद

- अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद 20-25 टन प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में देनी चाहिए।
- NPK प्रत्येक को 60 किलो की दर से लगाया जाता है।
- नाइट्रोजन को दो भागों में बांटकर पहली बार रोपण के समय और दूसरा लहसुन के खेत में रोपण के 30 दिन बाद दिया जाता है।
- बोरेक्स / 10 किग्रा ध्हेक्टेयर का प्रयोगरू बल्ब का आकार और उपज बढ़ाने के लिए।

लहसुन में अंतरसांस्कृतिक संचालन:

- लहसुन में हाथ से निराई करने से फसल को नुकसान हो सकता हैए इसलिए रासायनिक शाकनाशी जैसे पूर्व उभरने वाले खरपतवारनाशी. पेंडीमेथालिन / 1.5 किग्रा।
- GA3 @ 400 पीपीएम का पर्ण अनुप्रयोग या बल्ब / GA3 50 पीपीएम का उपचार बल्बों के गठन को उत्तेजित करता है।
- पुष्पक्रम के चरण में इस उपचार से प्रति बल्ब लौंग की संख्या में वृद्धि होती है और भंडारण में पत्ती बनने में देरी होती है।
- 900 से 1400 पीपीएम की दर से एथरेल पौधे की ऊंचाई को बाधित करने वाला पाया गया।
- 1000 पीपीएम की दर से सीसीसी के परिणामस्वरूप सबसे अधिक पैदावार तब होती है जब बल्बों को रोपण से पहले भिगोया जाता है।
- एनएएए सीसीसीए एथरेल 50 पीपीएम की दर से 60 से 90 डीएपी पर छिड़काव किया जाता हैरू उपज और उपज योगदान देने वाले लक्षणों को बढ़ाने के लिए।

पौध संरक्षण

थ्रिप्स: थ्रिप्स को मिथाइल डिमैटन 25 ईसी 1 मिली/लीटर से नियंत्रित किया जा सकता है ।

नेमाटोड: नेमाटोड को रोपण के 30 दिन बाद कार्बोफ्यूरन 3 जी 1 किग्रा एआई / हेक्टेयर के आवेदन द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

रोग

लौंग सड़न: रोपण से पहले लौंग को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/किलोग्राम से उपचारित करें।

लहसुन की कटाई और उपज

लहसुन की कटाई

- लहसुन की पत्तियां पीली हो जाती हैं और सूखने लगती हैं और मुड़ने लगती हैं।
- परिपक्वता के लिए रोपण के 6 महीने बाद।
- लहसुन के कंदों को सावधानी से उठाकर ऊपर से बंधी पत्तियों को साफ करके एक सप्ताह तक छाया में सुखाया जाता है।

लहसुन की उपज

- 80 से 120 क्विंटल/हेक्टेयर